1. आशय स्पष्ट कीजिए:

(क) इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं है, असल चीज़ है बुद्धि का विकास ।

__उत्तर__: बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई को उपदेश देते हुए कहते हैं कि परीक्षा में पास हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है । बड़ी बात तो तब होती है जब बुद्धि का विकास होता है । यदि कोई व्यक्ति बहुत-सी परीक्षाएँ पास कर ले किंतु उसे अच्छे-बुरे में अंतर करना न आए तो उसकी पढ़ाई व्यर्थ है । पुस्तकों को पढ़कर उनके ज्ञान से अपनी बुद्धि का विकास करना ही असली शिक्षा है ।

(ख) फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था ।

__उत्तर__: छोटा भाई खेल-कूद, सैर-सपाटे और मटरगश्ती का बड़ा प्रेमी था । उसका बड़ा भाई इन सब बातों के लिए उसे खूब डाँटता-डपटता था । उसे घुड़कियाँ देता था, तिरस्कार करता था । परंतु फिर भी वह खेल-कूद को नहीं छोड़ पाता था । वह खेलों पर जान छिड़कता था । जिस प्रकार विभिन्न संकटों में फँसकर भी मनुष्य मोह-माया में बँधा रहता है, उसी प्रकार लेखक डाँट-फटकार सहकर भी खेल-कूद के आकर्षण से बँधा रहता था ।

(ग) बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने?

__उत्तर__: किसी भी मज़बूत मकान के लिए एक मज़बूत नींव का होना आवश्यक होता है। यदि नींव कमज़ोर होगी तो उस पर बना मकान भी कमज़ोर ही होगा। नींव जितनी मज़बूत होगी, उस पर बना मकान भी उतना ही मज़बूत होगा। किसी भी मज़बूत मकान के बनने में उसकी नींव का बहुत बड़ा योगदान होता है। यहाँ बड़े भाई साहब पर व्यंग्य किया गया है क्योंकि वह एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। वह अपनी पढ़ाई की बुनियाद मज़बूत डालना चाहते थे।

(घ) आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

__उत्तर__: छोटा भाई पतंग लूटने के लिए आकाश की ओर देखता हुआ दौड़ा जा रहा था। उसकी आँखें आकाश में उड़ने वाली पतंग रूपी यात्री की ओर थीं । वह कटी हुई पतंग धीरे-धीरे हवा में लहराती हुई नीचे की ओर गिरने को थी । उस समय वह पतंग ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे कोई पवित्र आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से धरती पर नया जन्म लेने के लिए उतर रही हो। वह पतंग स्वर्ग से निकली आत्मा के समान बिल्कुल शांत व पवित्र लग रही थी।

(ङ) 'हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती।'

__उत्तर__: लेखक जब खेल-कूद कर कमरे में आता तो उसे बड़े भाई साहब का डर लगा रहता । उनकी डाँट-फटकार उसके लिए सिर पर लटकती नंगी तलवार की तरह मालूम होती। फिर भी वह खेल-कूद का तिरस्कार नहीं कर पाता था। मृत्यु एक अटल सत्य है, जिसका प्रत्येक जीव को बोध है। इसके बावजूद सभी सांसारिक मायाजाल में घिरे रहते हैं। इसी प्रकार बड़े भाई साहब की फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी लेखक खेल-कूद में रुचि रखता था।

2. शैतान का हाल क्या हो गया था और क्यों? शाहेरूम भीख माँग-माँगकर क्यों मर गया ? इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर: शैतान को स्वर्ग से नरक में धकेल दिया गया था क्योंकि उसे यह अभिमान हो गया था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं। शाहेरूम भीख माँग-माँगकर इसलिए मर गया कि उसने भी एक बार अहंकार किया था। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि कभी भी अभिमान नहीं करना चाहिए। अपनी मेहनत से ही ज़िंदगी में सफलता प्राप्त होती है।

3. सालाना इम्तिहान में फ़ेल होने के बाद बड़े भाई ने पढ़ाई के लिए किस प्रकार परिश्रम किया?

उत्तर: बड़े भाई साहब ने पढ़ाई के लिए दिन-रात प्राणांतक परिश्रम किया। वे कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे। वे रात को दस बजे तक पढ़ते, फिर सुबह चार बजे उठकर पढ़ते और स्कूल जाने से पहले छः से साढ़े नौ बजे तक पढ़ते। पढ़ते-पढ़ते उनकी मुद्रा भी निस्तेज हो गई थी।

4. लेखक के मन में कौन-सी कुटिल भावना उदित हुई और क्यों?

उत्तर: लेखक के मन में कुटिल भावना उदित हुई कि यदि उसका बड़ा भाई अगले साल भी फ़ेल हो जाए तो वे दोनों एक ही कक्षा में हो जाएँगे । तब बड़ा भाई बात-बात पर उसका अपमान नहीं कर सकेगा।

5. अनुभव को महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने के लिए बड़ा भाई कौन-कौन से उदाहरण देता है?

उत्तर: बड़ा भाई अनुभव को महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने के लिए अपनी अम्माँ, दादा तथा हेड मास्टर की बूढ़ी माँ के उदाहरण देता है। ये तीनों अधिक पढ़े-लिखे नहीं हैं। फिर भी इन्हें ज़िंदगी का अनुभव अधिक है। इसलिए ये समझदारी से प्रबंध करते हैं, कुशलता से घर-खर्च चलाते हैं और अच्छी तरह देखभाल कर पाते हैं।

6. बड़े भाई साहब अंग्रेज़ी के बारे में क्या नसीहत देते रहते थे?

उत्तर: बड़े भाई साहब अंग्रेज़ी के बारे में छोटे भाई को यह नसीहत देते रहते थे कि अंग्रेज़ी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है। उसे पढ़ने के लिए रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है। ऐरा-गैरा नत्थू खैरा अंग्रेज़ी नहीं पढ़ सकता। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख पाते, बोलना तो दूर। अंग्रेज़ी पढ़ने-समझने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। वे अपना उदाहरण भी देते हैं।

7. लेखक को बाज़ार में पतंग लूटते देखकर बड़े भाई साहब ने उसे कैसे डाँटा?

उत्तर: एक दिन जब छोटा भाई पतंग लूटने के लिए दौड़ रहा था तो बाज़ार से लौटते अपने बड़े भाई साहब से टकरा गया। बड़े भाई साहब उसे देखते ही क्रोधित हो गए। उन्होंने उसे डाँटते हुए कहा कि अब वह जिस आठवीं कक्षा में है, वह कोई छोटी कक्षा नहीं है। उसे अपनी पोज़ीशन का ख्याल रखना चाहिए। इस कक्षा को पास करके तो पहले ज़माने में लोग नायब तहसीलदार बन जाया करते थे और आज भी अनेक आठवीं पास करने वाले लीडर और समाचार-पत्रों के संपादक हैं। अतः उसे अब इस आठवीं कक्षा में आने पर बाज़ारी लड़कों के साथ पतंग लूटते घूमना शोभा नहीं देता। उसे अब इस प्रकार नहीं घूमना चाहिए।

8. 'बड़े भाई साहब' पाठ में आदर्श स्थिति को बनाए रखने के फेर में बड़े भाई साहब का बचपना तिरोहित हो जाता है। कैसे?

<u>उत्तर</u>: प्रस्तुत पाठ में एक बड़े भाई साहब हैं, जो हैं तो छोटे ही, लेकिन घर में उनसे छोटा एक भाई और है। उससे उम्र में केवल कुछ साल बड़ा होने के कारण उनसे बड़ी-बड़ी अपेक्षाएँ की जाती हैं। बड़ा होने के नाते वे खुद भी यही चाहते और कोशिश करते हैं कि वे जो कुछ भी करें, वह छोटे भाई के लिए एक मिसाल का काम करे। इस आदर्श स्थिति को बनाए रखने के फेर में बड़े भाई साहब का बचपना तिरोहित हो जाता है।

9. 'वह स्वभाव से अध्ययनशील थे।' - इस कथन में छिपा व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

<u>उत्तर</u>: इस कथन में गहरा व्यंग्य है। बड़ा भाई प्रकट रूप में बहुत अध्ययनशील जान पड़ता था । जब भी देखो, ऐसा लगता था कि वह किताबों में ही घुसा रहता हो । यहाँ तक कि उसने पढ़-पढ़ कर अपना चेहरा तेजहीन कर डाला था। किंतु उसका अध्ययन एक दिखावा मात्र था। वह समझता तो कुछ था ही नहीं, केवल रटता रहता था । जब रटते-रटते बोर हो जाता था तो किताबों और कॉपियों पर बेकार की तस्वीरें बनाता या शब्द-रचना करता रहता था। वह अपनी मंद प्रतिभा को उपदेश देकर छिपाने का प्रयास करता था।

10. लेखक की खेल-कूद के प्रति रुचि की तुलना किससे की गई है?

<u>उत्तर</u>: लेखक खेल-कूद में अपनी अत्यधिक रुचि होने के कारण सदा बड़े भाई से तिरस्कार पाता था । यद्यपि वह उनसे छिपकर खेलता था फिर भी पकड़ा जाता था और बड़े भाई साहब उसे बुरी तरह फटकारते थे। छोटे भाई की खेल-कूद में रुचि की तुलना मौत और विपत्ति के बीच फँसे व्यक्ति के मोह-माया के बंधनों में जकड़े होने से की गई है। जिस प्रकार व्यक्ति विपत्ति और मृत्यु के बीच फँसे होने पर भी मोह-माया को नहीं छोड़ पाता, उसी प्रकार छोटा भाई भी बड़े भाई साहब द्वारा अनेक प्रकार से अपमानित होकर भी खेल-कूद को छोड़ पाने में असमर्थ था ।

11. लेखक के अनुसार बड़े भाई की रचनाओं को समझना उसके लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी। कैसे?

<u>उत्तर</u>: छोटे भाई का कहना है कि बड़े भाई साहब स्वभाव से बड़े ही अध्ययनशील थे। वे हरदम किताबें खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य । मसलन एक बार उनकी कॉपी पर लेखक ने यह इबारत देखी - स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई। राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक - इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। लेखक ने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकाले, लेकिन असफल रहा और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नौवीं जमात में थे, लेखक पाँचवीं में । उनकी रचनाओं को समझना उसके लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी ।

12. बड़ा भाई छोटे भाई पर शासन करने के लिए कौन-कौन से उपाय करता है?

<u>उत्तर</u>: बड़ा भाई छोटे भाई पर शासन करने के लिए निम्नलिखित उपाय करता है:

- लेखक द्वारा मनमानी करने पर वह उसे घमंड नहीं करने की सीख देता है। वह रावण, शैतान, शाहेरूम जैसे बड़े-बड़े अभिमानियों की फ़ज़ीहत के उदाहरण देता है।
- वह किताबी शिक्षा की बजाय जीवन के अनुभव को अधिक काम की चीज़ बताता है ।
- वह इतिहास, रेखागणित और निबंध-लेखन की शिक्षा को व्यर्थ बताता है।
- वह भाई द्वारा न पढ़ने पर और खेलने में मन लगाने पर लंबे-लंबे भाषण देता है। उस भाषण में अपने फ़ेल होने का, पढ़ाई के कठिन होने का, स्वयं के खेल-कूद से दूर रहने का उदाहरण देता है ।
- वह हमेशा छोटे भाई के खेल-कूद और स्वच्छंदता पर नियंत्रण रखता है। उससे रोज़ सवाल पूछता है कि वह कहाँ गया था ।
- स्वयं फ़ेल होने पर वह सफलता की बजाय बुद्धि के विकास को महत्त्वपूर्ण बताता है। फिर वह अपने ज्ञान की डींग हाँककर उस पर हावी होता है।
- वह आचरण की महिमा और गौरव को महत्त्वपूर्ण बताकर छोटे भाई को अपमानित करता है।

13. 'बड़े भाई साहब' कहानी से आपको क्या संदेश मिलता है?

<u>उत्तर</u>: इस कहानी से हमें यह संदेश मिलता है कि

- हम पढ़ाई को सहज रूप से करें। हम उसका हौव्वा न खड़ा करें।
- हम परीक्षा के तनाव में चौबीसों घंटे किताबों में न घुसे रहें। इससे हमारी सोच-विचार की प्रक्रिया बंद हो जाती है और पढ़ाई व्यर्थ हो जाती है।
- पाठ को रटने की बजाय उसे समझने की कोशिश करें। अपनी समझ को विकसित करें।
- खेल-कूद पढ़ाई के विरोध में नहीं है। यह पढ़ाई में सहायक हो सकती है।

'बड़े भाई साहब' कहानी हमें यह प्रेरणा देती है कि हम अपनी स्थिति, शक्ति और सीमा को समझें। उसी के अनुरूप व्यवहार करें। यदि हम स्वयं अपने गिरेबान में नहीं झाँकते लेकिन औरों से उम्मीदें करते हैं, तो हम हँसी के पात्र बन जाते हैं। यदि हम स्वयं योग्य नहीं हैं, तो हम दूसरे को उपदेश देने का अधिकार भी खो बैठते हैं।